॥ करवा चौथ व्रत कथा ॥

॥ ॐ उमायै नमः ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ करवा चौथ व्रत कथा ॥

वीरावती और सात भाइयों की प्रचलित कथा का सरल हिंदी रूपांतरण। लोकपरंपरा में इसके प्रसंगों के अलग-अलग रूप मिलते हैं।

बहुत समय पहले एक नगर में एक ब्राह्मण परिवार रहता था। उस परिवार में सात पुत्र और एक पुत्री थी। पुत्री का नाम वीरावती था। सात भाइयों की एकमात्र बहन होने के कारण वह पूरे परिवार की लाडली थी। माता-पिता और भाई उससे बहुत स्नेह करते थे। समय आने पर उसका विवाह एक योग्य युवक से हुआ।

विवाह के बाद पहली करवा चौथ के अवसर पर वीरावती अपने मायके में थी। उसने अपनी भाभियों के साथ पति के मंगल और सुखी दांपत्य की कामना से व्रत रखा। दिनभर उसने श्रद्धापूर्वक माता गौरी का स्मरण किया और चंद्रमा निकलने की प्रतीक्षा करने लगी।

दिन बीतने के साथ वीरावती भूख-प्यास से व्याकुल हो गई। संध्या होते-होते उसकी दुर्बलता बहुत बढ़ गई और वह मूर्च्छित होकर गिर पड़ी। भाइयों ने अपनी बहन की यह दशा देखी तो वे अत्यंत चिंतित हो उठे। उन्हें मालूम था कि वीरावती चंद्र दर्शन किए बिना व्रत नहीं खोलेगी।

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ वीरावती की परीक्षा ॥

बहन को भोजन कराने के लिए भाइयों ने एक उपाय किया। उनमें से एक भाई दूर स्थित पेड़ पर चढ़ गया और छलनी के पीछे दीपक रख दिया। दूर से उसकी रोशनी ऐसी दिखाई देने लगी, मानो वृक्षों के बीच चंद्रमा उदित हो रहा हो।

जब वीरावती को होश आया तो भाइयों ने उसे वह रोशनी दिखाई और कहा कि चंद्रमा निकल आया है। उसने भाइयों की बात पर विश्वास कर लिया। दीपक की रोशनी को चंद्रमा समझकर उसने अर्घ्य दिया और भोजन करने बैठ गई। उस समय वास्तविक चंद्रोदय नहीं हुआ था।

कथा के अनुसार, भोजन आरंभ करते ही उसे अशुभ संकेत मिले। पहले कौर में बाल निकला और दूसरे कौर पर छींक आई। इसी बीच ससुराल से बुलावा आ गया। वीरावती घबराकर वहाँ पहुँची तो उसे अपने पति के निधन का समाचार मिला। वह गहरे शोक में डूब गई और देवी से सहायता की प्रार्थना करने लगी।

वीरावती का दुःख देखकर देवी इंद्राणी उसके पास आईं। उन्होंने बताया कि उसे भ्रमवश चंद्रमा के उदय से पहले व्रत खुलवा दिया गया था। देवी ने उसे निराश होने के स्थान पर श्रद्धा और धैर्य बनाए रखने का मार्ग बताया।

Hargharpandit
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ देवी का आशीर्वाद ॥

देवी इंद्राणी ने वीरावती को वर्षभर आने वाली चतुर्थियों का व्रत करने और अगली करवा चौथ की पूजा विधिपूर्वक संपन्न करने का उपदेश दिया। वीरावती ने देवी के वचनों को स्वीकार किया और भक्ति के साथ अपना संकल्प निभाया।

अगली करवा चौथ आने पर उसने माता गौरी और शिव परिवार का पूजन किया। इस बार उसने वास्तविक चंद्रोदय की प्रतीक्षा की, चंद्रमा को अर्घ्य दिया और व्रत पूर्ण किया। कथा में वर्णित है कि देवी की कृपा से उसके पति को पुनः जीवन मिला और परिवार में आनंद लौट आया। वीरावती ने देवी को प्रणाम करके कृतज्ञता व्यक्त की।

कथा का फल

लोकमान्यता में इस कथा का पाठ सौभाग्य, दांपत्य के मंगल और परिवार की सुख-शांति की कामना से किया जाता है। इसका भाव श्रद्धा, धैर्य, सत्य और आपसी विश्वास को महत्व देना है। पति-पत्नी का स्नेह, एक-दूसरे की देखभाल और सम्मान इस पर्व को सार्थक बनाते हैं।

समापन प्रार्थना

हे माता गौरी! हमारे परिवार में प्रेम, सद्भाव और संतोष बनाए रखें। सभी के जीवन में स्वास्थ्य, शांति और मंगल हो। हमें सत्य बोलने, धैर्य रखने और एक-दूसरे का सहारा बनने की प्रेरणा दें।

॥ ॐ उमायै नमः ॥